शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
260 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

उत्तर कोरिया की नाभिकीय शक्ति का अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव

सत्येन्द्र कुमार
शोध छात्र, सैन्य अध्ययन
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय,
कानपुर

सारांश

जिस प्रकार से नाभिकीय शस्त्रों ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और सम्बन्धों को प्रभावित किया है, कोई अन्य माध्यम अथवा साधन उसका मुकाबला नहीं कर सकता। इस विचार ने नाभिकीय शक्ति के प्रसार को भी बढ़ावा दिया है। इसलिये आज प्रत्येक राष्ट्र या तो नाभिकीय शक्ति सम्पन्न होने का प्रयास कर रहा है या फिर उस दिशा में प्रयत्नशील है। इसी कड़ी में एक और राष्ट्र का नाम शामिल हो गया है और वो है उत्तर कोरिया। जिस प्रकार से उत्तर कोरिया पिछले कई वर्षों से नाभिकीय शक्ति सम्पन्न होने और नाभिकीय शस्त्रों को बनाने की दिशा में प्रयास कर रहा था, उसने अन्तर्राष्ट्रीय जगत के माथे पर चिंता की लकीरें खींच दीं थीं। और जब उत्तर कोरिया ने नाभिकीय शक्ति प्राप्त कर ली है, उसने अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा और शांति के लिए खतरे की घंटी बजा दी है क्योंकि जिस प्रकार की उत्तर कोरिया की नीतियाँ हैं और जिस प्रकार का व्यवहार वो करता है, वह अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और शांति के लिए सही नहीं है। उत्तर कोरिया का तानाशाही रवैया, दक्षिण कोरिया के प्रति उसका आक्रामक व्यवहार और दक्षिण कोरिया–अमेरिका के पारस्परिक संबंधों के फलस्वरूप अमेरिका से उत्तर कोरिया के तनावपूर्ण सम्बन्धों ने अन्तर्राष्ट्रीय जगत में खलबली मचा कर रख दी है। उत्तर कोरिया द्वारा परमाणु अप्रसार के अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन करते हुए जिस प्रकार से नाभिकीय शक्ति सम्पन्न होने में सफलता अर्जित की गयी, उसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय जगत की प्रतिक्रिया सकारात्मक नहीं है क्योंकि जहां एक तरफ उत्तर कोरिया की इस हरकत से अंतर्राष्ट्रीय परमाणु अप्रसार और शांति के प्रयासों को धक्का लगा है, वहीं दूसरी ओर उत्तर कोरिया की इस हरकत ने अन्य राज्यों की नाभिकीय शक्ति सम्पन्न होने की इच्छा को और बढ़ा दिया है। इस शोध आलेख के अन्तर्गत उत्तर कोरिया के परमाणु हथियार और शक्ति का अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, शांति प्रयासों, सम्बन्धों और राजनीति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य बिन्दु

अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा, शांति, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, परमाणु शक्ति, नाभिकीय शक्ति, नाभिकीय हथियार, शस्त्र, उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया, अमेरिका, शक्ति संतुलन, संघर्ष।

परिचय

शक्ति प्राप्ति की लालसा ने आज विश्व में शक्ति के संघर्ष को बढ़ावा दिया है। आज प्रत्येक राष्ट्र स्वयं को ज्यादा से ज्यादा शक्तिशाली बनाने के लिए प्रयासरत है। इस अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति प्रतिस्पर्धा ने शक्ति संतुलन को बिगाड़कर नये विवादों और संघर्षों को जन्म दिया है। राष्ट्रीय हितों की पूर्ति और सुरक्षा के लिए स्वयं को शक्तिशाली बनाने और उसमें लगातार वृद्धि करने धारणा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और राजनीति में प्रमुख भूमिका निभाती रही है, इसलिये आज सभी राष्ट्र किसी भी प्रकार से स्वयं को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आज नाभिकीय हथियार और नाभिकीय शक्ति, राष्ट्रीय शक्ति और सुरक्षा के लिए एक प्रमुख विकल्प के रूप में उभरा है। अंतर्राष्ट्रीय जगत में नाभिकीय शक्ति, शक्ति का एक ऐसा स्तर है जिसके आगे अन्य विकल्प प्रभावहीन हो जाते हैं। नाभिकीय हथियारों की प्रबल मारक क्षमता और विध्वंसक शक्ति द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पूरी दुनिया ने देखी, जब अमेरिका ने जापान के दो शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम से हमला किया। यह हमला इतना भयावह और संहारक था कि उसने द्वितीय विश्व युद्ध की दिशा और दशा ही बदल दी। नाभिकीय हथियारों का प्रभाव केवल तात्कालिक नहीं था। इसने अंतर्राष्ट्रीय जगत को दीर्घकालिक तौर से प्रभावित किया। नाभिकीय हथियारों ने केवल शक्ति की पारंपरिक अवधारणा को ही प्रभावित नहीं किया बल्कि इसने शक्ति की एक नई परिभाषा स्थापित की। यहां से एक नये युग का प्रारंभ हुआ, नाभिकीय शक्ति का युग। ऐसा युग, जहाँ सुरक्षा की पारम्परिक अवधारणा महत्वहीन हो गई। जहाँ राष्ट्रीय शक्ति और सुरक्षा के लिये नये विचारों तथा अवधारणाओं और नीतियों का विकास हुआ।

शक्ति के अन्य साधनों की अपेक्षा नाभिकीय शक्ति सर्वोपरि हो गई। इसने अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन को बुरी तरह प्रभावित किया जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय सुरक्षा और शक्ति के नये आयाम और मानदंड स्थापित होने लगे, जिसमें परमाणु शक्ति एक केन्द्र बिन्दु बनकर उभरी। इसने नाभिकीय शस्त्रों की नयी दौड़ शुरु कर दी क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र नाभिकीय शक्ति सम्पन्न होना चाहता था। एक के बाद एक कई राष्ट्रों ने परमाणु परीक्षण कर नाभिकीय हथियार बनाने की क्षमता हासिल कर ली। 1945 में अमेरिका के बाद 1949 में सोवियत संघ, 1952 में ब्रिटेन, 1960 में फ्रांस, 1964 में चीन, 1974 में भारत और 1998 में पाकिस्तान ने परमाणु परीक्षण कर नाभिकीय शक्ति प्राप्त कर ली।[1] इस नाभिकीय प्रसार ने अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा और शांति के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न कर दिया। युद्ध की स्थिति में पृथ्वी के सम्पूर्ण विनाश का खतरा प्रकट होने लगा। बढ़ते हुए खतरे को देखते हुए नाभिकीय हथियारों के प्रसार और नाभिकीय शस्त्रों के नियंत्रण और निशस्त्रीकरण के प्रयास अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किये जाने लगे ताकि भविष्य को सम्भावित खतरों से बचाया जा सके। जिसमें राष्ट्रों के सम्मिलित प्रयास शामिल हैं। जिसमें आंशिक परीक्षण प्रतिबंध संधि (1963), परमाणु अप्रसार संधि (1968) और व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (1996) आदि प्रमुख हैं।[2] लेकिन कई राष्ट्रों ने इन प्रयासों को स्वीकार करने से मना कर दिया। इसके उन्होंने दो प्रमुख कारण बताये, पहला कि ये प्रयास उनकी सुरक्षा आवश्यकताओं की पूर्ति और सुरक्षा चिंताओं का निराकरण नहीं करते और दूसरा कि ये समझौते भेदभाव पूर्ण हैं क्योंकि

ये गैर परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों को तो नाभिकीय शक्ति प्राप्ति से दूर रखते हैं लेकिन परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों के नाभिकीय हथियारों को खत्म करने, नाभिकीय शस्त्र नियंत्रण की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाते।इसलिए अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों, कानून और नियमों को धता बताते हुए कई राष्ट्र परमाणु शक्ति को प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयासरत रहे और अपने नाभिकीय कार्यक्रम को जारी रखा।

इसी कड़ी में एक और राष्ट्र का नाम नाभिकीय शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों की सूची में शामिल हो गया है और वो है उत्तर कोरिया। पिछले कुछ वर्षों से अति सक्रिय नाभिकीय कार्यक्रम और परमाणु परीक्षणों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अब उत्तर कोरिया भी परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों की कतार में शामिल हो गया है। सितम्बर 2017 में उत्तर कोरिया द्वारा किये गये छठे परमाणु परीक्षण ने उसे नाभिकीय शक्ति और हथियार की श्रेणी का राष्ट्र घोषित कर दिया है। उत्तर कोरिया द्वारा किया गया थर्मोन्यूक्लियर परीक्षण यह साबित करता है कि अब उत्तर कोरिया के पास भी नाभिकीय हथियार है।[3] उत्तर कोरिया के परमाणु हथियारों ने नये खतरों की शुरुआत कर दी है। इसने अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और शांति के प्रयासों के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय जगत द्वारा किये जा रहे परमाणु प्रसार को रोकने सम्बन्धी उपायों पर गहरा आघात किया है। उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया के सम्बन्ध जग–जाहिर हैं और अमेरिका–दक्षिण कोरिया के सामरिक रिश्ते, अमेरिका और उत्तर कोरिया के सम्बन्धों पर प्रभाव डालते हैं। उत्तर कोरिया द्वारा परमाणु शक्ति हासिल करने के लिए किये गये प्रयास अमेरिका को कभी पसन्द नहीं आये और अमेरिका ने सदैव इसका विरोध किया है। अमेरिका और उत्तर कोरिया के सम्बन्धों की तल्खी हमेशा दिखाई पड़ती है जब दोनों देश खुले आम एक दूसरे के विरुद्ध बल प्रयोग की धमकी देते रहते हैं। इसलिये उत्तर कोरिया द्वारा नाभिकीय शक्ति प्राप्त करने के बाद अमेरिका द्वारा जो प्रतिक्रिया हुई है, वह वैश्विक शांति के लिए सकारात्मक तो बिल्कुल नहीं कही जा सकती। यह घटना क्षेत्रीय शक्ति संघर्ष को भी बढ़ावा देने का कार्य करेगी तथा विश्व के कई अन्य देश भी परमाणु क्षमता हासिल करने का प्रयास करेंगे। यह शक्ति संतुलन को तो बिगाड़ेगा ही, साथ ही साथ नये विवादों और संघर्षों को भी जन्म देगा जो वैश्विक सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा।

उत्तर कोरिया का परमाणु कार्यक्रम

उत्तर कोरिया ने 1950 के दशक से परमाणु हथियार विकसित करने में रुचि दिखाई है। उसके परमाणु कार्यक्रम का पता लगभग 1962 में तब लगा जब उसने स्वयं के लिए सम्पूर्ण किलेबन्दी की घोषणा की। 1963 में सोवियत संघ ने शांतिपूर्ण नाभिकीय ऊर्जा कार्यक्रम में उत्तर कोरिया की मदद करने की स्वीकृति दी।[4] उत्तर कोरिया के परमाणु हथियार के कार्यक्रम की शुरूआत 1980 के दशक की मानी जाती है जो ऊर्जा कार्यक्रम से हथियार निर्माण में परिवर्तित होती चली गयी। उत्तर कोरिया ने अपना पहला परमाणु परीक्षण 9 अक्टूबर 2006 को एक भूमिगत नाभिकीय विस्फोट के रूप में किया। 25 मई 2009 में उसने दूसरा परमाणु परीक्षण किया, जिसकी शक्ति 2–7 किलो टन आंकी गई। 12 फरवरी 2013 को उत्तर कोरिया ने अपना तीसरा भूमिगत परमाणु परीक्षण किया। इस परमाणु परीक्षण की क्षमता 6–9 किलो टन आंकी गई। 6

जनवरी 2016 को उसने चौथा परमाणु परीक्षण किया, जिसमें उत्तर कोरिया ने यह कहा कि उसने हाइड्रोजन बम बनाने की तकनीकी हासिल कर ली है लेकिन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह प्रमाणित नहीं हो सका।[5] 9 सितम्बर 2016 को उत्तर कोरिया ने अपना पाँचवाँ परमाणु परीक्षण किया जो अब तक उसके द्वारा किये गये सभी परमाणु परीक्षणों में सबसे अधिक शक्तिशाली था। इस परीक्षण की क्षमता 30 किलो टन तक आंकी गई और इसने अंतर्राष्ट्रीय जगत में उत्तर कोरिया को एक नाभिकीय शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया।[6] 3 सितम्बर 2017 को उत्तर कोरिया ने थर्मोन्यूक्लियर परमाणु परीक्षण किया।[7]

परमाणु हथियारों के विकास के साथ–साथ उत्तर कोरिया ने अपने प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम का भी समेकित विकास किया क्योंकि परमाणु हथियारों को हमला करने की सुविधा प्रदान करने के लिए प्रक्षेपास्त्रों की आवश्यकता पड़ती है। उत्तर कोरिया ने कम दूरी से लेकर लम्बी दूरी की मिसाइलों के विकास और निर्माण के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता पायी है। उत्तर कोरिया का दावा तो अन्तर महाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल की क्षमता होने का भी है। ह्वासोन्ग–5 से लेकर ह्वासोन्ग–12 तक तथा नोडोन्ग और पुगुसोन्ग, ताइपेडान्ग मिसाइलें उत्तर कोरिया के आयुध भण्डार में शामिल है जो कम दूरी से लेकर लम्बी दूरी तक परमाणु आयुध ले जाने में सक्षम हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव

सितम्बर 2017 को उत्तर कोरिया ने अपना छठवां परमाणु परीक्षण कर पूरी दुनिया को चौंका दिया। अब कोरियाई संकट केवल कोरियाई प्रायद्वीप तक ही सीमित नहीं रह गया है बल्कि यह सम्पूर्ण विश्व के लिए एक गंभीर संकट बन गया है। विश्व के कई देशों जैसे– अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, भारत आदि ने उत्तर कोरिया की इस हरकत पर कड़ी प्रतिक्रिया दी। अमेरिका ने तो खुले आम उत्तर कोरिया के विरुद्ध बल प्रयोग की धमकी भी दी। अमेरिका और उत्तर कोरिया के तनावपूर्ण सम्बन्धों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। उत्तर कोरिया ने कभी भी ना ही वैश्विक शांति और सुरक्षा की परवाह की है और ना ही कभी अंतर्राष्ट्रीय नियमों और कानूनों को माना है। कभी वह परमाणु अप्रसार संधि को मानने से पीछे हट जाता है तो कभी वह द्विपक्षीय समझौतों की शर्तों से पीछे हट जाता है। जैसे वर्ष 2003 में उत्तर कोरिया और अन्य पांच देशों– अमेरिका, चीन, रूस, जापान और दक्षिण कोरिया के बीच परमाणु हथियारों से सम्बन्धित बातचीत हुई लेकिन उत्तर कोरिया के अड़ियल रवैये के कारण किसी अंजाम तक नहीं पहुँच सकी। उसका तानाशाही रवैया किसी से छुपा नहीं है और वो आये दिन अपनी मनमानी करता रहता है। तमाम अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों और दबावों के बावजूद भी उत्तर कोरिया ने न केवल अपने परमाणु और प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम को जारी रखा बल्कि उसमें सफलता भी अर्जित की। लेकिन उत्तर कोरिया की यही जिद सम्पूर्ण विश्व के लिए एक मुसीबत बन गई है।

वैश्विक समुदाय उत्तर कोरिया पर तमाम तरह के और प्रतिबंध लगाने की बात करता है ताकि उसे अलग–थलग कर सके। अमेरिका तो यहां तक कहता है कि वह उस देश से भी कोई आर्थिक सम्बन्ध नहीं रखेगा, जो उत्तर कोरिया का साथ देगा। लेकिन इससे परिस्थिति और ज्यादा बिगड़ती जा रही है। उत्तर कोरिया इसे अपने खिलाफ अन्य राज्यों की साजिश के रूप

में देखता है और उसका जबाव सैन्य तरीके से ही देने की कोशिश करेगा। इसके अलावा उत्तर कोरिया की नाभिकीय शक्ति ने क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति संतुलन को भी नुकसान पहुंचाया है। दक्षिण कोरिया से उसके खराब सम्बन्ध हमेशा से तनाव और संघर्ष को बढ़ावा देते रहे हैं। ऐसे में वह अपनी नाभिकीय शक्ति का प्रयोग दक्षिण कोरिया पर दबाव बनाने और युद्ध की स्थिति में उसे हथियार के रूप में प्रयोग करने के लिए भी कर सकता है। वैसे भी उत्तर कोरिया की नीतियाँ हमेशा ही आक्रामक रहती है, इसलिये इस सम्भावना से कभी भी इनकार नहीं किया जा सकता कि वह अपने नाभिकीय शक्ति का प्रयोग हमले के लिए नहीं करेगा। अमेरिका और दक्षिण कोरिया के सामरिक सम्बन्ध उत्तर कोरिया को कभी रास नहीं आये और वो हमेशा इसका विरोध करता रहा है। ये भी उत्तर कोरिया और अमेरिका के खराब सम्बन्धों का एक प्रमुख कारण है। ऐसे में कोरियाई प्रायद्वीप का झगड़ा कब अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष में तबदील हो जाये, कहा नहीं जा सकता। और जब संघर्ष में परमाणु हथियारों का प्रयोग होने की सम्भावना हो, तो स्थिति बहुत ज्यादा चिंताजनक हो जाती है। क्योंकि सभी यह जानते हैं कि युद्ध की दशा में उत्तर कोरिया अपने नाभिकीय हथियारों का प्रयोग करने से पीछे नहीं हटेगा।

इसके अलावा उत्तर कोरिया के परमाणु हथियार के कार्यक्रम ने विश्व में परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने सम्बन्धी प्रयासों को भी गहरा आघात पहुंचाया है क्योंकि जिस प्रकार उत्तर कोरिया ने अंतर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन कर नाभिकीय शक्ति अर्जित की, वह अन्य राष्ट्रों को भी इस दिशा में आगे बढने के लिए प्रेरित करेगी। वैसे भी आज प्रत्येक राष्ट्र अपनी सुरक्षा के नाम पर परमाणु बम प्राप्त करने की लालसा रखता है और चोरी छिपे उसे पाने का प्रयास भी करता है। ऐसे में उत्तर कोरिया की यह हरकत परमाणु अप्रसार के प्रयासों पर पानी फेर सकती है। और यदि प्रत्येक राष्ट्र नाभिकीय शक्ति पाने की कोशिश करेगा या उसमें सफलता अर्जित कर लेगा तो विश्व का क्या होगा, इसकी कल्पना करना भी मुश्किल है।

निष्कर्ष

यह तो हमेशा से प्रमाणित था कि नाभिकीय शक्ति और हथियार कभी भी सम्पूर्ण विश्व के लिए कल्याणकारी और सृजनकारी नहीं थे और उनकी अति विनाश की क्षमता हमेशा यह साबित करती रहेगी। यदि ऐसी महाविध्वंसक शक्ति उत्तर कोरिया जैसे देश के हाथों में पड़ जाये तो इसके परिणामों की कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। उत्तर कोरिया की आक्रामक नीतियाँ, खराब अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और विश्व में अपना प्रभुत्व फैलाने की लालसा सम्पूर्ण विश्व के लिए कब खतरा बन जाये, कहा नही जा सकता। वैसे भी उत्तर कोरिया के नाभिकीय हथियारों से आशंका, अविश्वास और नाभिकीय युद्ध के खतरे का जो माहौल बना है, वह अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और शांति व्यवस्था के खतरे और चिंता की घंटी है। क्योंकि यदि उत्तर कोरिया के इस व्यवहार को रोका ना गया तो पूरे विश्व का अस्तित्व ही संकट में पड़ जायेगा। इसीलिये वैश्विक सुरक्षा और शांति को बनाए रखने के लिए तथा विश्व के कल्याण के लिये यह आवश्यक हो गया है कि नाभिकीय हथियारों के प्रति ठोस, प्रभावशाली और सार्थक कदम उठाये जायें। यही विश्व के लिए कल्याणकारी और शांति तथा सुरक्षा को बनाये रखने के लिए मददगार होगा।

सन्दर्भ

1. डा. अशोक कुमार सिंह, राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 2010
2. डा. बी.एल.फड़िया, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2015
3. बीबीसी न्यूज, 15 सितम्बर 2017
4. दि वाशिंगटन पोस्ट, "नार्थ कोरिया नाउमेकिंग मिसाइल रेडी न्युक्लीअर वेपन", अगस्त 2017
5. आर्म्स कन्ट्रोल टुडे, नार्थ कोरिया क्लेम्स हाइड्रोजन बाम्ब टेस्ट, फरवरी 2016
6. बीबीसी न्यूज हिन्दी, उत्तर कोरिया के पाँचवे परमाणु परीक्षण के मायने, 9 सितम्बर 2016
7. दि वाशिंगटन पोस्ट, "नार्थ कोरिया नाउ मेकिंग मिसाइल रेडी न्युक्लीअर वेपन", अगस्त 2017